बी० ए० पार्ट - I
हिन्दी रचना
डॉ॰ अनिरुद्ध प्रसाद
महाराजा कॉलेज, आरा

प्रथम रश्मि

~~प्रश्नोत्तर~~

प्रश्न 8 - 'प्रथम रश्मि' कविता के भाव-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : 'प्रथम रश्मि' कविता श्री सुमित्रानंदन रचित एक मौलिक कविता है। इस कविता में कवि ने सूर्य की पहली रश्मियों का पृथ्वी पर आने का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है।

कवि कहता है — हे बाल विहंगनी, तुम्हें कैसे पता चल गया कि प्रातः काल की पहली किरणें सारे अग-जग में अपना प्रकाश बिखेरने लगी हैं? तुमने इतना मधुर गान कहाँ से सीखा। हे बाल विहंगनी तू तो अपने घोंसलों के पंखों में सुख छिपकर सोयी थी और तुम्हारे दरवाजे पर जुगनू रूपी प्रहरी पहरे दे रहे थे। शशि किरणों से सुन्दर नभचर पृथ्वी पर उतर-उतर कर नई कलियों का मुख चूम कर मुस्कुराने की कला सीख रहे थे। तारों के दीपक स्नेह-हीन होकर बोल रहे थे। पेड़ों के पत्ते शब्दहीन थे। पृथ्वी पर प्राणियों के प्राण सुवसन कर रहे थे और सभी जगह अंधकार छाया हुआ था। ऐसी स्थिति में, हे वृक्ष पर रहने वाली, तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि सुबह होने वाली है और तुम कूकने लगीं। लगता है तुम अंतर्यामी हो या सूरज का आना पहले ही देख लिया था।

यहाँ अभी रात का वातावरण छाया था, चाँदनी बिखरी थी, पर विहंगनी को थोड़ा भी भ्रम नहीं होता। न जाने सुबह उसे कहाँ घेर देती है और वह बोलने लगती है। सारी प्रकृति अंधकार में डूबी हुई है, भूत-प्रेम जादू टोना चला रहे हैं। चाँद रात भर जगने के कारण श्रम से थक जाने के कारण प्रकाशहीन हो अपना मुख छिपा रहा है। कमल की गोद में पक्षी चकवाल अपनी प्रेमसी की

Scanned with CamScanner

~~सोए~~ ये पूरे रहने के कारण खो कमगन है। सारा संसार सोया है। सारी इंद्रियाँ मूर्छित। जड़ और चेतन का पार्थक्य मिट गया है। ऐसी स्थिति में हे बाल विहंगनी तुमने जागरण का गीत कैसे गाया? अपनी मधुर आवाज से चारों ओर सुंदरता और सौरभ फैला दिया। लगता है पंछी के चहकने से ही बागों में फूल खिले और उनकी गंध फैली।

आगे कवि कहता है — ऐसा लगता है मानो अंधकार में सारा संसार डुबका है। पर सुबह होते ही सारा संसार स्पष्ट हो गया। नाना रूपों वाला यह संसार अभी कुछ देर पहले अंधकार में विलीन था, पर प्रकाश होते ही संसार का नाना रूपों वाला संसार स्पष्ट हो गया। लगा, संसार में विभिन्न वस्तुएँ हैं। सुबह होते ही वृक्ष के पत्ते मलय पवन के स्पर्श पाकर चंचल हो उठे हैं। सोया हुआ समीर बहने लगा है। फूलों पर ओस की बूंदें सूर्य किरणों से चमक उठी हैं। ऐसा लगता है मानो फूल अपनी हँसी बिखेर रहे हों। फूलों की पंखुड़ियाँ फैल गई हैं और सर्वत्र गंध फैल गया है। मधुमक्खियाँ और तितलियाँ फूलों पर मँडराने लगे हैं। सारे संसार में स्पन्दन, कंपन और नया जीवन प्रकट हुआ है। ऐसा सुरम्य और सुंदर प्रभात का आना मनुष्यों को तो बाद में मालूम हुआ, पर हे बाल विहंगनी, तुम्हें तो इसका पता बहुत पहले ही चल गया था। बताओ तो, तुम्हें यह पहचान किसने सिखलाया? और कहाँ से पाया कानों को सुख देने वाला इतना सुंदर गीत? बोलो, बाल विहंगनी, बोलो न।